શ્રીવ્રજેશ ચિંતન

ડો. જયેન્દ્ર સોની

શ્રીવ્રજેશ ચિંતન

(*"શ્રીવ્રજેશ ચિંતન"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

श्रीशुद्धाद्वैत तृतीय गृहाधिश गो.१०८ श्रीवृजेशकुमारजी महाराजश्री
द्वारा रचित "भाव निकुंज" मां थी साभार प्रस्तुत
****

" श्रीव्रजेश चिंतन " -(१)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चरणकान्ति स्तोत्र"

""

"श्रीद्वारकाधीश प्रभुना चरणकमलना नख्समुहना अग्रभागथी प्रकट थती, करुणा थी रक्तिम आभा धरावती तेजकिरणो नी राशि , अज्ञान-मान-कपट विद्वेष आदि थी फेलायेला धुमाडा समान मारा मनना अन्धकार ने दूर करो" (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"दुष्टोंनुं निवारण करनार, भक्तिरस थी अत्यन्त पुष्ट थयेला अने श्रीमद वैश्वानर नी कृपाथी मारा हृदयमा प्रविष्ट थयेला भावोनुं, श्रीद्वारकाधीश प्रभुना चरणकमलना नखसमुह ना अग्रभागथी प्रकट थतां तेमज करुणां थी रक्तिम आभा धरावता तेजकिरणो सदा पोषण करो" (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

"""""""""""""""""""""""""""""""”""""""""""""""""

"श्रीद्वाराकाधीश प्रभुना चरणकमल ना नखसमुह ना अग्र भाग्यथी निकळता तेजकिरणो मारा अन्तःकरणमां प्रवेश करी श्रीकृष्णना चरणकमलनी भक्ति ने मारा हृदय मां दृढ बनावी, दोषोनु निवारण करो तथा मारा समग्र देह, मन, वाणीने संजीवनी प्रदान करो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४)

****

"श्रीप्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

""

"श्रीवल्लभना वचनामृतो ना बोधने पोतानी कृपा द्वारा सहसा मारा मनमां प्रबुद्ध करनार अने मारी बुद्धि ने

श्रीव्रजनाथनी भक्ति मां प्रवृत्त कारावनार श्रीद्वारकाधीश प्रभु नां चरणकमल ना नखसमुह ना अग्रभाग थी प्रकट थती तेजकिरणो नी राशि छे" (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५)

****

"श्रीप्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

"मारा चित्तने चरणाश्रय भक्तियुक्त बनावनार, कोई पण प्रकारना उद्वेगथी हुं अन्यमनस्क न थाऊं ए प्रकारे पुनः भावने पुष्ट करनार, तथा मारा चित्त मां लीलाओनो प्रकाश करी दैन्यभावने प्रगाढ़ बनावनार श्रीद्वारकाधीश प्रभु ना चरणकमल ना नखसमुह ना अग्रभाग थी प्रकट थतां तेज किरणों छे". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन " -(६)

****

"श्रीप्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

"श्रीगोपांगनाओ ना मधुर भावोथी मने रसाविष्ट करनार, गोपबालकोए प्राप्त करेल मृदु सख्यभाव नुं मारामां सिंचन करनार अने श्रीयुगलस्वरूपनी कृपाभीनी दृष्टी मारा पर करावनार श्रीद्वारकाधीश प्रभुना नखसमुह ना अग्रभागथी प्रकट थती तेजकिरणो नी कांति छे". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७)

****

"श्रीप्रभोश्चरण कांति स्तोत्र"

"श्रीतातचरण श्रीबालकृष्णजी ए अमने प्रदान करेली, सकल इष्टनुं दान करनार श्रीस्वामिनीजी नां चरणारविंद नी सेवा द्वारा श्री युगलस्वरूपनी कृपाभीनी दृष्टि मारा पर करावनार श्रीद्वारकाधीश प्रभुनां चरणकमलना नख्समुहना अग्रभागथी प्रकट थतो तेजकिरणो नो समूह छे". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" -(८)

****

"श्री द्वारकाधीश प्रभुना चरणकमल ना नखसमुहना अग्रभागथी प्रकट थतां तेजकिरणो मारा नेत्रयुगलने ज्ञानना अंजनथी पमार्जित करो, शास्त्रोना अर्थनी परस्पर संगति करे तेवी बुद्धि प्रदान करो तथा वाणीने गंगानी लहेरो समान अस्खलित प्रवाहित करो". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९)

****

"श्री आचार्यचरणोनी कृपाथी परिपूर्ण थई रहेला, तथा श्रीप्रभुनी प्रभाना प्रभावथी एमना दास 'वृजेश' द्वारा ग्रंथित श्रीप्रभुना चरणारविन्द नी कांति ना आ स्तोत्रना पाठ थी भक्तजनो पोताना अपराधों ना संपूर्ण समुहने समाप्त करी दे छे". (९)

"इति श्रीव्रजभूषणजी ना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी द्वारा रचित
श्रीमत्प्रभोश्चरणकान्ति स्तोत्र संपूर्ण "
****

"श्री व्रजेश चिंतन" - (१०)

****

"श्री ललितत्रिभंग स्तवन"

"वृंदावन मां श्रीयमुनाजीना कोमल तट पर हजारों गोपीजनोना संगमां विहरी रहेला श्रीराधिकाजी भुवनसुन्दर कमनीय रूपवाळा श्रीनंदराजकुमारने त्रिभंगललित मुद्रा मां निहाळी एमने रासमां पधारावी रह्या छे". (१).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११)

****

"श्री ललितत्रिभंग स्तवन"

"गोपीजनो द्वारा संपादित रासगोष्टिमा, सोनेरी जरीनी किनारिवाळा वस्रोमां सुसज्ज, श्रीकंठमां गुंजामाला अने श्रीमस्तक पर मयुरपिच्छ नो गुच्छ धारण करेला, सुंदर ललित-त्रिभंग स्वरुपे, श्यामसुंदर श्री गोवर्धनधर स्वयं वेणुनाद करतां विलास करी रह्या छे". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

"श्रीयमुनाजी ना तट पर गुंजावन नी कुंज मां, कळा करी प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करतां मयूर जेवा नटवेशधारी धारी रसेश, रासेश्वरी श्रीराधिकाजीना मुख्य मंडल द्वारा थई रहेला गीत अने नृत्यने प्रतिभाव आपता, ललितत्रिभंग स्वरूपे नृत्य करतां अत्यन्त शोभायमान थई रह्या छे" (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

"श्रीराधिकाजी अने रसेश्वर श्रीकृष्णना सरस रासना विलास नृत्य मां, वीणावादन द्वारा ताल आपी रहेला श्रीललिताजी पोतानी दक्षता ने गौरवपूर्वक अभिव्यक्ति करता एक ताल जाणीजोइने चुकी जाय छे, त्यांरे ते श्री रसिकेंद्रशेखर पण एवीज दक्षताथी तालभंग थवा दीधाए विना नृत्यनी गति संभाली ले छे, अने चतुरशिरोमणि ना ए चातुर्यथि स्नेहार्द्र श्री ललिताजी ए रीते श्रीललित त्रिभंगने प्रसन्नता प्रदान करे छे." (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

""

"श्रीचंद्रावलीजी अने श्रीललिताजी ना सुमधुर गीतना स्वरोमां श्रीयमुनाजी तरंगों रूपी पोतानी भुजाओथी ताल आपी रह्या छे, अने वनितावृन्द सहित मुख्य गोपीजनो पोताना नुपुरोना नादथी श्री राधिकाजी तथा श्रीललितत्रिभंग ना नृत्यमां साथ आपी रह्या छे". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१५)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

""

"श्रीगोपीजनोना युथोथी घेरायेला श्रीप्रभुना नयनरम्य अने अनिर्वाचनिय ललितत्रिभंग स्वरूपनां दर्शन करी देवांगनाओ तथा आकाशमां चंद्रनी गति जाणे स्थगित थई गई होय तेवो अनुभव करता देवो नो समूह अंजलि भरी-भरीने पुष्पवृष्टि करी रह्यो छे. (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" -(१६)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

""

"पोतानी भुजाओं फेलावी परिरंभण लीला मां मग्न अने परस्पर गाढ़ आलिंगन मां बद्ध होवा छतां मुख घुमावी सन्मुख दृष्टिनुं दान करतां, ललित-त्रिभंग स्वरूपे दृश्यमान उभय स्वरूपो ना लावण्यामृत नुं पान श्रीगोपीजनो अत्यन्त हर्षपूर्वक पोताना नेत्रो द्वारा करी रह्या छे तथा 'एक प्राण वपु दोय' एवा श्रीयुगलस्वरूपने चिरंजीव होवाना आशीष प्रदान करी रह्या छे". (७)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (१७)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

""

"नृत्यमां नवीन गति, ताल अने रसार्द्र गीतों द्वारा श्री गोपिजनो मां रतिरास जाणे प्रबोध करी रह्या होय एवा ललित-त्रिभंग स्वरूपधारी श्रीनन्दनन्दन मारा मनमां सदैव विलास करो" (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१८)

****

"श्रीललितत्रिभंग स्तवन"

""

"श्रीगोपीजनोना अनेकानेक मनोरथो ना फलरूपे विहित रासमां श्रीवृजराजकुमार नी रसार्द्र लीला ने रसभावयुक्त भक्तो द्वारा हृदयने आल्हाद आपता पदोमां गवाई छे. एना ध्यान - स्मरण पूर्वक 'वृजेश' द्वारा रचाएल आ स्तवन समाप्त थाय छे." (९)

'इति श्री मद् व्रजभूषणलालजी ना पुत्र श्रीव्रजेशकुमारजी कृत
श्रीललित-त्रिभंग स्तवन संपूर्ण'

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१९)

"श्रीराधिका स्तवन"

"श्रीगोपीजनोना युथोना अधिपति श्रीगोपीजनवल्लभ नी आराधना मां रत अने श्रीगोपीजनवल्लभ स्वयं जेमने आराधे छे एवा श्रीप्रभुनी आल्हादिनी शक्तिस्वरूपा हे व्रजभामिनी ! अति शोभायमान कुंजमंडपमा कमलपत्रोथी रचायेली शय्या पर आप बिराजी रह्या छो. (श्रीगोवर्धनधरण नी पीठिकामा अंकित) मोर, पोपट आदि ना मधुर कलरव थी गुंजायमान ए कुंजमंडप नागोमां श्रेष्ठ श्रीशेषजी अने सिंहथी सारीरीते रक्षाएलो छे अने गाय, घेटु अने मुनिओ ए कुंजमंडप नी आसपास विचरी रह्या छे. श्रीगोवर्धनधरण नी साथे कुंजमंडप मां शोभी रहेला, संसारसमुद्रथी पार उतारनारा हे श्रीराधिकाजी ! मारी आपत्तिने दूर करो" (१)

"श्रव्रजेश चिंतन" - (२०)

"श्रीराधिका स्तवन"

"ताजा माखण थी भरेला पात्रने लइ आप पधारी रह्या छो त्यां बालस्वरूपे बिराजमान छतां गुप्तरूपे किशोरलीला करतां श्री नंदराजकुमार नुं आगमन थतां अति हर्षित थई आप एमने गोदमा उठावी लो छो अने ए साथे ज हे गजगामिनी ! स्नेहना आधिक्यथी पोतानु स्वरूप भूली आप निज प्रियतम नुं ज स्वरूप धारण करी लो छो. हे श्रीराधिकाजी ! आपनां श्रीकृष्ण सम ए स्वरूपनां आजे पण भाविकोने दर्शन थई रह्या छे. श्री गोवर्धनधरण नी साथे कुंजमंडपमा शोभी रहेला, संसारसमुद्रथी पर उतारनारा हे श्रीराधिकाजी ! मारी आपत्तिने दूर करो. (२)

"श्रीवृजेश चिंतन" -(२१)

२. "श्री राधिका स्तवन"

"श्रीमथुराधीश स्वरूपे गोचरण माटे वन मां पधारेला श्रीप्रभना आह्वाहन थी दही-भात आदि सामग्रीओ लइने आवेला श्रीगोपीजनो सखामंडलमां बिराजमान श्रीप्रभु पासे पहोंचे छे, त्यारे एकांत मिलन नो रसिक शिरोमणी नो संकेत पामीने हे कृष्ण रसात्मिका ! आप अत्यन्त शरमाई जाओ छो.आ लीला ना दर्शन, अनुभव, सहभागीतानु दान क्यारेक मने पण थाय, एज विनंती आपने करवा जेवी लागे छे. श्रीगोवर्धनधरण न्जी साथे कुंजमंडप मां शोभी रहेला संसारसमुद्रथी पार उतारनारा हे श्रीराधिकाजी ! मारी आपत्ति ने दूर करो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२२)

२. "श्रीराधिका स्तवन"

"श्रीविठ्ठलेशना गुणोथी परिपूर्ण अने ज्ञानामृत नी वर्षा करनार, श्रीप्रभुना श्रीअंग नी नीलकांति अने आपनां श्रीअंग नी पीत कांति थी शोभायमान कुंजमा बिराजमान एवा आप, श्रीप्रभु द्वारा वृजजनो पासे करावायेला गोवर्धनयाग

प्रसंगे श्रीप्रभुए ज्यारे गोबर्धन नुं रूप धारण कर्युं त्यांरे 'गोपाये स्वात्मयोगेन' ए श्रीहरिना शब्दो अनुसार श्रीप्रभुनी आत्मशक्ति स्वरूपे प्रकट थनार आपज छो. सात दिवस अने सात रात्रि पर्यन्त ना ए अवसरे समस्त व्रजजनोने आल्हाद आपनारा अने भक्तो ने सदा अभयनुं दान देनारा हे व्रजभूषणा ! श्रीप्रभुनी आल्हादिनी शक्ति आपज छो. श्रीगोवर्धनधारण नी साथे कुंजमंडप मां शोभी रहेला,संसारसमुद्र थी पार उतारनारा हे श्रीराधिकांजी ! मारी आपत्ति ने दूर करो". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२३)

****

२. "श्री राधिका स्तवन"

""""""""""""""""""""""

"श्रीद्वारकेश प्रभुना नायिका, रमण जेमने प्रिय छे एवा आपे श्रीयमुनाजीना तट पर गुंजावन मां गुंजानी लताओं नी अद्भुत निकुंज सिद्ध करी छे अने निज प्राणप्रेष्ठने त्यां पधरावी गुंजाफल, बहुमूल्य मणि अने मोतीना आभूषणों थी श्रृंगारकल्पद्रुम श्रीप्रभुनो अद्भुत श्रृंगार कर्यो छे. भावात्मा श्रीप्रभुए पण ए आभूषणों ने आपना भावथी अंगीकार कर्या छे. श्रीगोवर्धनधरणनी साथे कुंजमंडप मा शोभी रहेला, संसार स्मूदर्थी पार उतारनारा हे श्री राधिकाजी ! मारी आपत्ति ने दूर करो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२४)

****

२. "श्री राधिका स्तवन"

""""""""""""""""""""""

श्रीगोकुलेश्वरनी जमणी अने डाबी बाजुए श्रीचंद्रावलीजी अने श्रीवृषभानुजा एम् उभय स्वरूपे बिराजनारा आप दिव्य शोभाथी देदीप्यमान थई रहया छो. भक्तोनी अभिलाषा पूर्ण करनारा अने निजजनोना चित्तने पोतांना मां स्थापनारा एवा श्रीगोकुलेश्वर नां उभय नायिकाओ स्वरूपे बिराजतां आप मने आपना दास्य नुं दान करवांनी कृपा करो. श्रीगोवर्धनधरण नी साथे कुंजमंडप मां शोभी रहेला, संसारसमुद्र थी पार उतारनारा हे श्रीराधिकाजी ! मारी आपत्तिने दूर करो" (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२५)

****

२. "श्री राधिका स्तवन"

""""""""""""""""""""""

"बन्ने बाजू रासेश्वरीथी शोभायमान, अने संमोहक नृत्य करतां श्रीगोपीजन ना यूथमां मधुराधिपति श्रीगोकुलचंद्र रासमण्डलना प्रमुख सोळ व्रजस्वामिनिओ वच्चे आठ स्वरूपो धारण करी रासविलास करे छे त्यांरे ए दिव्य रासोत्सवनां दर्शन करवा बड़भागी बनेला देव-देवीओ आकाशमांथी पुष्पवृष्टि करे छे. श्रीगोवर्धनधरणनी साथे कुंजमंडप मां शोभी रहेलां संसार समुद्रथी पार उतारनारा हे श्री राधिकाजी ! मारी आपत्ति दूर करो" (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन " -(२६)

****

२. "श्री राधिका स्तवन"

"श्रीस्वामिनीजीना युगल सहित बिराजमान, कामदेवने निज स्वरूपलावण्यथी मोहित करनार श्रीमदनमोहनजी स्वरूपे रासेश्वर वेणुनादना श्रवण थी रसाविष्ट थयेला श्रीगोपीजनोंने वन मां एकांतमां बोलावे छे, अने त्यां पोतांना स्वरुपने अन्तर्हित करी दे छे त्यारे विरहथी अत्यन्त व्याकुल बनेला श्रीगोपीजनोनी दैन्यसभर प्रार्थनाथी पुनः प्रकट थयेला प्राणप्रेष्ठना दर्शन थी आनंदित थयेला हे वृषभानुजा ! आप मारी दूषण थी रक्षा करो. श्रीगोवर्धनधारण नी साथे कुंजमंडप मा शोभी रहेलां, संसारसमुद्र थी पार उतारनारा हे श्री राधिकाजी, मारी आपत्ति दूर करो." (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२७)

****

२."श्री राधिका स्तवन"

"हे व्रजनायिका ! हे दयानिधि ! आपनां चरणारविन्द ने मस्तके धारण करनार अने श्री द्वारकाधीश प्रभुनो सेवक एवो हुं दोषोथी भरेलो होवा छतां आपनी कृपादृष्टिनी वृष्टि वड़े सदा , सर्व प्रकारे मारुं रक्षण करो. हे श्री राधिकाजी ! संसार समुद्रथी पार उतारनारा ! स्वकीयजनोए द्वेषवश मारा ऊपर ऊभी करेली आपत्तिनुं निवारण करो. श्रीगोवर्धनधरणनी साथे कंजमंडप मा शोभी रहेलां, संसार समुद्रथी पार उतारनारा हे श्री राधिकाजी मारी आपत्तिने दूर करो" (९)

"इति श्रीव्रजभूषणजी ना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी द्वारा रचित
श्री राधिका स्तवन संपूर्ण "

****

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२८)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

"चंचल तरंगोवाळां, गोकुलनी शोभारुप, हे भानुसुता ! सदा जय पामता आप मारुं पालन करो. कलकल नादथी वहेतां, भक्तिदात्री, हे सूर्यपुत्री ! आपनो सदा जय हो. मारु लालन करो (प्रेमपूर्वक मारा भावनुं संवर्धन करो). सदा जय पामता हे तपनसुता ! दोषनुं निवारण करनारा अने पाप प्रवृत्ति छोड़ावनारा आप मने पार उतारो. हे भय नुं निवारण करनारा, संकटनो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो." (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (२९)

****

३ "श्री यमुना स्तवन"

"मधुदैत्यना संहारक श्रीकृष्णमां अनुरागवाळा, काचबाना वाहनवाळा, सदाय जय पामता हे सुरसुता ! मारु रक्षण करो. पोतांना जलमा कमलोने विकसावनारा, पोताना प्रवाह मां पुष्पोनु वहन करनारा, श्री नंदराजकुमार ने पोतानु सर्वस्व माननारा, मारु गोपन करो. (कृपा) समुद्रना तरंगोने धारण करनारा अने ए तरंग रूपी हस्तथी (रासविहारी ना

रासनृत्य मां) ताल आपनारा, रसराजनी रस-रास लीलाना सहभागी एवा आप मारुं पालन करो. हे भय नुं निवारण करनारा, संकटो नो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो." (२)

"श्री व्रजेश चिंतन" - (३०)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

"श्रीहरिना समान वर्णवाळा, श्रीहरि समान रूप धारण करनारा, तथा जीवनो रसात्मक पुरुषोत्तम साथे संबंध-संगम करावनारा आप मने पार कुतरो. यम यातना नो भय भांगी, भक्तना देहेन्द्रियादिनुं अंतःकरण सहित शुद्धिकरण करनारा एवा आपनुं जल भौतिक नथी पण व्रजराज तथा व्रजभक्तो ना स्मरश्रमजल रुपी दिव्य सुधा स्वरूप छे. आप मने धारण करो. श्रीहरिना संगम ने प्राप्त थयेली वालुका-रजनुं दान करनारा, रसिकेंद्रशेखर अने व्रजरसिकाओ नी इच्छानुकुल लीला सामग्री सिद्ध करनारा है श्री यमुनाजी ! आप मारू पालन करो. हे भयनु निवारण करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो" (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३१)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

"पोताना धरानो आश्रय करीने रहेलां कालिय नाग ना दोषनुं निवारण करनारा हे भानुसुता ! दिव्य पुष्टि भक्तिमार्ग मा स्थिरता नुं मने दान करो. कराल कलिकालना प्रभावथी उत्पन्न थयेली कलुषितताओ ने दूर करी कलियुगना दुषणो थी भक्तो ने बचावनारां, श्रीकृष्णनी कृपाशक्ति नुं द्रवीभूत स्वरूप एवा आप मने पार उतारो. आपनां उभय तटप्रदेश पर आवेला वनोना निवासी स्थावर-जंगम सर्व नुं वनमाली ना चरणे निवेदन करावी एमने श्री....प्रभुनी सेवानुं सुख आपनारां एवा आप मारु लालन करो. हे भयनु निवारण करनारा, संकटो नो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३२)

****

३. "श्री यमुना स्तवन

"श्रीबलदेवजी द्वारा हळ थी खेंचावाने कारणे वांका चुका प्रवाहवाळा, रास-रस थी परिप्लावित एवा आप मारी रक्षा करो. निज तट पर नवपल्लवीत वृक्षोनी कुंज मां निज प्राणप्रेष्ठने सुखदायक लीलाओ थीं रिझवी, एमां ज पोतानु सुख माननारा आप मारुं गोपन करो. पक्षीयो, हरणाओ अने अन्य जीवो ने पोताना सुधास्वरूप पयपान द्वारा मातृवात्सल्यथी पोषनारा एवा आप मने तारो. हे भयनु निवारण करनारा, संकटो नो नाश करनारा श्रीयमुनाजी ! सदा जय पामतां आप मने पावन करो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३३)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

""

"शरद नी रात्रिए रासेश्वरना स्वल्प संयोगथी उत्पन्न थयेला सौभाग्यमदना शमन माटे अन्तर्हित थयेला प्राणप्रेष्ठ ने शोधवाना सर्व उपायो निष्फल जतां आपनां पुलिनमां आवी अत्यन्त दैन्यपूर्वक गवायेला गोपीगीत थी प्रसन्न थई व्रजवधुओना मनभावने निवृत्त करनारा हे श्री यमुनाजी ! मने तारो. पोतानी शोभाथी सकल व्रजमंडलने मोहित करनारा, सदा व्रजपतिना संयोगनो अनुभव करनारा, अने निजभक्तोंने कारावनारां, हे हंससुता ! आप सदा जय पामतां मारु पालन करो. आपना द्वारा श्रीहरि ना शरणे सोंपायेला जीवोना अलौकिक जीवन नो निर्वाह करनारा अने एमना द्वारा श्रीप्रभुनुं सुख संपादन थाय एवी सेवा कारावनारां आप मारुं धारण करो. हे भयनु निवारण करनारा, संकटनो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३४)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

""

"वेणुधर ना वेणुनाद ना श्रवणथी अति हर्षित, श्रीगोकुलना तट पर बिराजमान आप मारुं धारण करो. श्रीहरिना चरणकमलोथी पावन थयेला आपना जल मां मज्जन द्वारा श्रीप्रभुना साक्षात संबंध ने योग्य देह बनावनारां आप मने पार उतारो. महारस ना दाता, परम कृपालु, सदा भगवद भक्तिमा विलसनारा अने निजभक्तोने विलसावनारा एवा आप मारुं लालन करो. हे भयनु निवारण करनारा श्रीयमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो". (७).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३५)

****

३. "श्री यमुना स्तवन"

""

"निजजनोना जाणे-अजाणे थयेला दोषोनु निवारण करनारा, शान्ति नुं दान करनारां आप मने तारो. श्रीप्रभुना चरणारविन्द नुं दान करावी प्रसन्न थनारा, निजभक्तोना भावोनी शुद्धि करनारा आप मारुं धारण करो. अनेक मुनिओ, देवो अने मनुष्यो द्वारा सेवायेला अने एमने इच्छित फलनुं दान करनारा आप मारुं पालन करो. हे भयनु निवारण करनारा, संकटोनो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता आप मने पावन करो". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" -(३६)

****

३. श्री यमुना स्तवन"

""

" जेना प्रत्येक शब्दोमां आपनी वंदना समायेली छे ऐवी आ संस्तुति हे भानुतनया ! मारा द्वारा लखाई छे, अने एना फलरूपे सर्वेत्र अभयनुं दान करनारा श्रीयशोदोत्संगलालित ना चरणकमल मारा माथे बिराजे छे. श्रीव्रजभक्तो ना हृदयना भावोने शब्दो मां गुन्थीने रचाएलु आ गीत सदैव हृदय मां धारण करवा योग्य छे. हे भयनु निवारण करनारा, संकटो नो नाश करनारा श्री यमुनाजी ! सदा जय पामता मने पावन करो". (९)

'इति श्री व्रजभूषणलालजी ना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी द्वारा
रचित श्री यमुना स्तवन संपूर्ण'

……

"श्रीव्रजेश चिंतन - (३७)

****

४. "कलिंदनंदिनी स्तुति"

"निजस्वरूपनी कान्ति थी निकुंज मंडपनी शोभा वधारनार, पोतांना मुग्धभावथी रसेश्वर श्रीकृष्णने विनोदित करनार, स्वभावथी ज राजवंशनी भावना नुं अनुभावन करनार अने पुलिंदीजीओ ना यूथना मुख्य नायिका हे श्रीकालिन्दनंदिनी ! अमारा पर कृपा नी अभिवृष्टि करो. (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (३८)

****

४. "कलिन्दनंदिनी स्तुति"

"पोताना तरंगों रूपी श्रीहस्तमां धारण करेला कंकणो ना झंकार-रणकार थी श्रीप्रभुने निंद्रामां थी जगावनार, निकुंज स्थित केलिमंडपना आंगण मां अनेक गोपीजनो सहित बिराजमान चतुर्थ मंडलेश्वरी अने श्रीपुलिंदीजिओ ना यूथना मुख्य नायिका हे श्री कालिन्दनंदिनी ! अमारा पर कृपा नी अभीवर्षा करो" (२).

"श्रीवृजेश चिंतन" -(३९)

****

४. "कालिन्दनंदिनी स्तुति"

"पोताना अलौकिक श्रीअंग परना आभरणों दूर करी श्रीयमुनाजी ना दिव्य जलमां जलक्रीड़ा पश्चात विराजमान व्रजेश्वरी श्रीराधिकाजी अने व्रजेश्वर श्रीकृष्णने दूध-फल-विविध भोजन सामग्री समर्पित करनार, श्रीयुगलस्वरूप ना स्मरश्रमजल रूपी रस थी आप्लावित अने श्रीपुलिंदीजीओना यूथना मुख्य नायिका हे श्रीभानुसुते ! अमारा पर कृपा नी अभिवृष्टि करो". (३).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४०)

****

४. "कलिन्दनंदिनी स्तुति"

"सदा निज प्रियतमना प्रेमयुक्त मधुर भाषण करनार, सदा श्रीव्रजेश्वरना संयोग मां मग्न रहेनार, निज तट स्थित गुंजानी निकुंज मां अनुरागयुक्त, निज हृदय स्थित आनंदने चंचल तरंगों रुपे अभिव्यक्त करनार, तरंगोना कलकल निनाद रुपे मधुर स्वरथी श्रीयुगलस्वरूपनी रसमय लीलाओनुं सहर्ष गान करनार, हे श्रीकलिंदजा ! अमारा पर कृपानी अभिवर्षा करो". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४१)

****

४. "कलिन्दनंदिनी स्तुति

"निज स्वामीना मनोभावोने जाणी तदनुरुप लीलोपयोगी कार्य करनारा श्रीव्रजाधिपनां स्वामीनी, बहुमूल्य रेशमी वस्त्रों अने अआभूषणो थी शोभातां, श्रीहस्तमां बे कमल धारण करनार, मृदंग-चंग-किन्नरी आदि वाद्यो सहित सखीजनो जेमनां आदरपूर्वक यशोगान करी रह्या छे एवां हे कलिंदनंदिनि ! अमारा पर कृपा करो." (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४२)

****

४. "कलिंदनंदिनी स्तुति"

"भूतल पर पधारी पृथ्वीने पावन करनार अने समस्त दोषोनु निवारण करनार, श्रीव्रजपति ना चित्तनुं आकर्षण करी एमने प्रेमपूर्वक वश करनार, श्रीवृन्दावनविहारीं ना विहारोमां सदैव एमनी साथे रहेनार, प्रसन्नतापूर्वक भक्तो ना दोषोने दूर करी एमना अलौकिक मनोरथो सिद्ध करनार हे श्रीकलिंदनंदिनी ! अमारा पर कृपा नी अभिवृष्टि करो." (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४३)

****

४. "कलिन्दनंदिनी स्तुति"

"कुमारिका गोपीजनोना मनोरथोनी पूर्ति हेतु कदंब वृक्षनी शाखा पर बिराजी वेणुनाद करी रहेलां श्रीनन्दनंदनी सर्व रसमय लीलाओ मां सहायभूत थवा सदैव तत्पर है श्रीकलिंदजा ! अमारा पर आनंदपूर्वक कृपा नी अभिवृष्टि करो" (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन " -(४४)

****

४. "कलिंदनंदिनी स्तुति"

"जगतमां रहेला दैवीजीवोने भगवच्चरणारविंदमा समर्पित करावी, भक्तिमार्ग पर अग्रेसर थवामां एमने सदा सहायता प्रदान करनार अने एमने सत्संग प्राप्त करावी निर्गुण भक्तिमार्ग ना सेवनमां नियोजित करनार, श्रीकृष्ण ना चतुर्थ स्वामिनी हे श्रीभानुनंदिनी ! अमारा पर प्रसन्नतापूर्वक कृपानी अभिवृष्टि करो" (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४५)

****

४. "कलिंदनंदिनी स्तुति"

"प्रसन्न मनथी मारा द्वारा निवेदित करायेली आ स्तुतिने अंगीकार करी कलिंदनंदिनी चतुर्थ प्रिया मारा पर प्रसन्न थई मने श्रीनंदनंदननी सेवा नो लाभ सत्वर प्रदान करो. श्रीपुलिंदीजीओना यूथेश्वरी अने "कृपांजलधिसंश्रिता" हे सुरसुते ! अमारा पर कृपानी अभिवर्षा करो". (९)

"इति श्रीमद् व्रजभूषणजी ना पुत्र श्रीव्रजेशकुमारजी द्वारा कृत
श्री कलिंद नंदिनी स्तुति संपूर्ण "

****

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४६)

****

५. "श्री युगलगीति रसावली"

"सुवर्ण जेवी कांतियुक्त मुखारविंदवाळा हे गोपकुमारी ! आपनो जय थाओ, आप मारुं पालन करो. व्रज ना अधिपति, मनमोहक स्वरूपधारी, गोपबालकोना शिरोमणि अने गोकुलना स्वामी एवा हे प्रभु ! मारुं रक्षण करो. नविन कमल नी आकृतिवाळा मंडपमा शोभायमान हे श्रीयुगलस्वरूप ! मने आपनुं रक्षण प्रदान करो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमलों निवास आपो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४७)

****

५. "श्री युग्लगीति रसावली"

"उज्जवल सुधाकिरणो थी प्रकाशमान चंद्र जेवा श्रीमुख़वाळा हे गोपकुमारी ! मारुं पालन करो. नविन मेघ जेवा श्याम अने सुंदरतम स्वरुपवाळा, कृपासागर, भक्तेच्छापुरक हे श्रीकृष्ण ! मारुं गोपन करो. सुन्दर लताओथी निर्मित आच्छादित कुंज मां विलास करनार हे श्रीहरि ! मारुं रक्षण करो. समस्त व्रजजनो ना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमल मां निवास आपो." (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४८)

****

५. "श्री युगलगीति रसावली"

"मधुर सुरावली सहित गान जेमने प्रिय छे एवा श्रीललिताजी ! मारुं पालन करो. मणिमय वेणुना नादथी प्रकटित रसना आस्वादनमां पारायण हे श्रीगोकुलपति ! जेवो छुं तेवो मने नभावो, जलना तरंगों थी आर्द्र अने शीतल श्रीयमुनाजीना तट पर स्थित निकुंजमां बिराजमान हे नाथ ! मारुं सर्व प्रकारे रक्षण करो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार ! हे नाथ। ! मने सदा आपनां चरणों मां निवास अपो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (४९)

****

५. "श्रीयुगलगीति रसावली"

"श्रीमन्नंदराजकुमार ज जेमनुं सर्वस्व छे एवा हे श्रीयमुनाजी ! व्रजना वनोमां मारुं पालन करो. मनोहर कमल नी माला थी शोभायमान हे कलानिधि श्रीकृष्ण ! मारुं रक्षण करो. पुष्पो नी कलामय सज्ज़ाथी शुशोभित मंडपमा बिराजमान हे श्रीप्रभु ! जेवो छु तेवो मने नभावो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणों मां निवास आपो". (४)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (५०)

****

५. "श्रीयुगलगीति रसावली

"निज सखीमंडल साथे कुंज मां विहरी रहेलां हे गोपकुमारी ! आपनो जय हो, आप मारुं पालन करो. नवीन कुमारावस्था मां प्रवेशेला गोपबालको संगे बिराजमान, सुधानिधि, हे श्रीकृष्ण ! मारुं रक्षण करो. चांदीथी जटित शुशोभित भवन मां बिराजमान हे श्री युगलस्वरूप ! जेवो छुं एवो मने निभावो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमल माँ निवास आपो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५१)

****

५."श्रीयुगलगीति रसावली"

"श्रीहस्तमा ताजा माखण थी भरेलूं पात्र लईने पधारी रहेलां हे सुधास्वामिनी ! मारुं पालन करो. आनंदपूर्वक वेणुनादन द्वारा दिव्य सुरावलीओ प्रकट करनार हे मनमोहन ! मारुं सर्व प्रकारे रक्षण करो. प्रतिक्षण मनोहर स्वरूपधारी श्रीनन्दकुमार नुं सानिध्य मेळवी आपनार हे सखी- सहचारिगण ! मारुं रक्षण करो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमल मां निवास आपो" (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५२)

****

५. "श्रीयुगलगीति रसावली"

"नित्यनूतन रशेष ना रासरस थी परिप्लावित हे देवी ! मारुं सर्व प्रकारे पालन करो. कामदेवने मोहित करनार, वेणुमां सुधारस पूरनार, अने नृत्यविशारद हे नटवर ! मारुं गोपन करो. कोमल सुखप्रद लयथी नृत्य करी रहेला मंडलमां बिराजमान हे कृपानिधि श्रीकृष्ण ! मारी रक्षा करो. समस्त व्रजजनो ना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमलों मां निवास आपो". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५३)

****

५. "श्रीयुगलगीति रसावली"

"व्रजगोपिकाओकाओना कमल जेवा सुकोमल चरणोंना तालबद्ध नर्तनथी, व्रजपतिना आनंद माटे रचाएल रासमंडलना मध्य मा मरकत मणि नी जेम शोभायमान हे रासेश्वर ! जेवो छु तेवो मने निभावो. देवताओ द्वारा वंदित श्रीगोपीजनो अने श्रीनन्दकुमार ज्यां नृत्य करी रह्या छे ए रास ना मने दर्शन करावो. समस्त व्रजजनोना प्राणाधार हे नाथ ! मने सदा आपनां चरणकमलों मां निवास आपो". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५४)

****

५. "श्रीयुगलगीति रसावली"

"रसिकशिरोमणी , सुधानिधि श्रीं नंदकुंमार द्वारा श्रीगोपीजनो साथेनुं रमण, व्रजरमणियों साथे हास्यविनोद सहित रसविहारनी ललितलीला ना गान रुपी पुष्पोने आपनां कोमल चरणकमलोंमां हुं समर्पित करी रह्यो छुं. मने आपनां दास तरीके स्वीकारवानी कृपा करो". (९)

"इति श्रीव्रजभुषणजीना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी द्वारा
कथित श्रीयुगलगीति रसावली संपूर्ण".

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५५)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"हरण, गाय, मोर, पोपट आदि परिकरने पोताना ज स्वरूपमांथी प्रकट करनार, भाग्यवान जीवो ने भगवद स्वरूपे, सिंह, मुनि, सर्प, अथवा गोपबालक रुपे कृपापूर्वक दर्शन आपनार, तेमज तेमना मनोरथो पूर्ण करनार हे हरिदासवर्य ! श्रीव्रजाधिपना आ सेवक पर कृपा करो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५६)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"विश्वेश श्रीव्रजेशना चरणकमलोना सदैव-सम्यक सेवनना फल स्वरूपे अतिशय कांति-सामर्थ्य-शक्ति प्राप्त करी, एनो पोताना आराध्यना लीलाविहारो हेतु ज विनियोग करनार, तथा लीलाविहारी नी लीलाभूमिने छोड़ी अन्यत्र न जनार अने ए रीते पर्वत माटे वपरातु 'नग' नाम सार्थक करनार हे श्रीगिरिराज ! मुनि, देव, भक्तजनो आ ज कारणे आपने सदा वंदन करे छे. हे श्रीहरिदासवर्य ! श्रीव्रजाधिप ना आ सेवक पर कृपा करो." (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५७)

****

" ६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"भावपूर्ण हृदयथी आपनी परिक्रमा करनार जीवना हृदय मां आपनी कृपाथी श्रीप्रभुनी श्रीगोवर्धनोद्धरण लीलानुं सदा अनुसंधान बनी आवे ए ज आपनी परिक्रमानुं फल छे, जे हृदयना समस्त ताप अने दोषो नुं निवारण क्ररानारुं छे. हे श्रीहरिदासवर्य ! श्रीव्रजाधीशना आ सेवक पर कृपा करो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५८)

****

६.श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"आ कराल कलिकालना प्रभाव थी आपोआप उत्पन्न थता दोषो अने पापोनी परंपरा ने कारणे जे ताप नो अनुभव

थाय छे ए आपनां सानिध्य तथा स्मरण थी दूर थई जाय छे. श्री प्रभुना भक्तो प्रत्ये करूणानिधि स्वरूपे आपनो आ व्यवहार प्रसिद्ध -प्रकट छे. हे हरिदासवर्य ! श्रीव्रजपतिना आ सेवक पर कृपा करो". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (५९)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"नवपल्लवित वृक्षोनी वनराजी मां पोताना समवयस्क गोपबालको साथे प्रसन्नता, प्रफुल्लितता थी क्रीड़ा करनार विश्वमोहन श्रीगोपाल ना चरणकमलोंथी पवित्र थयेली पोतानी तलेटी नी अति कोमल रज द्वारा भक्तोने तेमना मनवांछित थी पण अधिक दान करनार हे हरिदासवर्य ! श्रीव्रजराज ना आ सेवक पर कृपा करो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (६०)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"श्रीहरिनी साथे मळी व्रजवासीओए श्रीगोवर्धनयाग द्वारा आपने प्रसन्न कर्या त्यारे श्रीहरिए पण प्रसन्नतापूर्वक एमना पर कृपा करी एमनी रक्षा करी. आ परथी समजाय छे के श्रीव्रजजीवननी कृपा नी प्राप्ति आपना कृपाबलथी ज थाय छे. हे श्रीहरिदासवर्य ! श्रीव्रजनायकना आ सेवक पर कृपा करो ". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (६१)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"आपनी शिलाओ पर सदैव विलास, विहार करनार श्रीमधुराधिपतिनी विभानो ज ए प्रभाव छे के भगवादीयो आपना स्वरुप मां श्री गोवर्धनधरनी ज भावना करे छे. वास्तवमां दास पदवी धारण करी बिराजमान आप स्वयं श्रीगोकुलाधीशज छो. हे श्रीहरिदासवर्य ! श्रीव्रजपतिना आ सेवक पर कृपा करो" (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (६२)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"खलधर्मथी भरेला आ कलियुग ना कारणे थती पीड़ाथी त्रस्त जीवो आपनो ज आश्रय करे छे, कारणके गोपालक, गायोना रक्षक एवा आपज शान्ति ना प्रदायक छो. आपनां प्रत्यक्ष सानिध्य मां न होवा छतां, अमे दूर रहिने पण आपनां चरणकमलोंमां प्रणाम करीए छीए. हे हरिदासवर्य ! श्रीव्रजनाथना आ सेवक पर कृपा करो." (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (६३)

****

६. "श्रीहरिदासवर्य स्तवन"

"श्रीगोकुलनायक हे श्रीगिरिराज ! अमे आपनां चरणो मां नतमस्तक छीए अने एना थकी ज श्रीव्रजभूषणनी कृपाने अमे क्षणमात्र मां प्राप्त करीए छीए. श्रीवृषभानुनंदिनी नी चरणरज मां लोटनारा अमे आपनां शरणे छीए. हे हरिदासवर्य ! श्रीव्रजाधिप ना आ सेवक पर कृपा करो". (९)

"श्रीमद व्रजभूषणजीना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी
द्वारा रचित श्रीहरिदासवर्य स्तवन सम्पूर्ण"

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (६४)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

"श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास आदि स्वरूपे वैदिक मतनो वेदांतना रुपे विकास करवा अने अज्ञानना कारणे छवायेला अंधकारने दूर करवा जे पूर्वमां प्रादुर्भूत थयेला, अने परब्रह्मना मूल स्वरूप पर आवी गयेला मायाना आवरणने हटावी शुद्ध अद्वैतना सिद्धांतने प्रस्थापित करवा जे श्रीवल्लभाचार्यचरण रुपे फरीथी भूतल पर प्रकट थया ए विभुवर श्रीहरिनो जय हो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (६५)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

"श्रीप्रभुना मुखार्विन्द स्थित वैश्वानर स्वरूपे निज भगवदीयोना हृदय मां विप्रयोगाग्नि ना ताप नुं दान करनार, तेमज पोतानी आभाना शीतल किरणो द्वारा एमना हृदयना तापने कृष्णलीला ना रस सिंचन थी शमावनार, तथा श्रीराधाकृष्ण ना युगलस्वरूप ना माधुर्य ने एमना चित्त मां स्थिर थाय ए प्रकारे एमना भावनी पुष्टि हेतु वाणी द्वारा अमृतवृष्टि करनार श्रीआचार्यचरणों ने हूँ सदा नमन करुं छुं". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (६६)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

" जगतना आसुरी जीवो ना दुष्ट स्वभाव ना कारणे निजजनोना हृदयमा पीड़ा उत्पन्न न थाय ए हेतुथी भक्तिमार्गने प्रकट करवा माटे ज जेमणे वैश्वानर स्वरूपे पृथ्वी पर प्रादुर्भूत थई श्रीप्रभुना शरणयुक्त पुष्टिमार्ग नुं प्रवर्तन कर्यू, एवा श्रीमद वल्लभचार्यचरण प्रसन्नतापूर्वक सदैव मारा मनमां बिराजो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंत्तन" - (६७)

****

"श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

" व्रजपति श्रीनंदराजकुमार मां सुदृढ़ स्नेह सहित भक्तिमार्गीय जीव निरंतर श्रीहरिनी सेवामां पोतांना देह ना विनियोगनूं अनुसंधान सिद्ध करे एज पोताना स्वमार्गमां मुक्ति छे, एवुं जीवन्मुक्तिनुं स्वरूप शुद्धाद्वैत मत मां

स्थापित करनार अने मायावादने निरस्त करनार श्रीवल्लभाचार्यचरणे प्रवर्तावेलो श्रीपुष्टिमार्ग मारा मन मां सदा बिराजमान रहे ऐवी कृपा हे कृपालु ! मारा पर करो". (४)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (६८)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं

"पाखण्डग्रस्त जगतमा दैवीजीवोने भगवतचरण रसिक बनाववा एमना ह्रदय मां श्रीगोपीजनोना भावयुक्त शुद्ध निष्काम भक्तिने प्रकट करनार, तथा तदनुसार कृष्णसेवाना रस मां रसाविष्ट थई जनार मनुष्य पर प्रसन्नतापूर्वक कृपा वरसावनार, भक्तिमार्गाब्जभानु श्रीवल्लभ, जे स्वयं गुणनिधि रुपे प्रसिद्ध छे, अमारा ह्रदय मां साक्षीरूपे बिराजमान रहो." (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (६९)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

"श्रीप्रभुनी आज्ञाथी, भूमिना भाग्यरूपे, भक्तोना उद्धार माटे ज भूतल पर पधारी दुष्टजीवोने तिरस्कारपूर्वक दूर करी, भक्तोने भगवन्मुखार्विंदनी सुधाथी स्निग्ध भावोनी अनुभूति द्वारा व्यथित जनोना ह्रदयने कृष्णभक्ति ना माध्यमथी शान्ति प्रदान करनार श्रीवल्लभाचार्यजी अमने पूर्वकथित भगवत चरणों नी एवी प्रीति नुं प्रसन्नतापूर्वक दान करो". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७०)

****

७. श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं

"पुष्टिमार्गनी स्थापना करी, ब्रह्मसंबंध ना दान द्वारा जीबोनी बुद्धिने निर्मल बनावी, श्रीप्रभुनां चरणकमलोनी सेवा हेतु प्रेमाभक्ति प्रदान करनार तथा सेवा माटे श्रीकृष्ण नां विविध मनोहारी लीलाओना स्वरूपो पधरावी आपनार, तेमज भक्तोना मनमां सर्वात्मभावना स्वरुपने स्थापित करनार श्रीवल्लभ अमारा पर अनुग्रह करो." (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७१)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

"शुद्धाद्वैत सिद्धान्त कथित श्रीराधाकृष्ण नुं नवयुगल स्वरूप बे भिन्न रुपे दृश्यमान थतुं होवा छतां एक अने अभिन्न छे, अने ब्रह्मरूपे सर्वत्र विविध गुणभावो थी संयुक्त होवा छतां मूल श्रीकृष्ण स्वरूप ज सेव्य तथा ध्येय छे एवा अनन्य भाव ना निज सेवकोने दान करवाना हेतु थी उपदेश करनार श्रीमद वल्लभाचार्यचरण कृपापूर्वक सदैव मारा चित्त मां बिराजो". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७२)

****

७. "श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकं"

"जेमना करकमलोमा धारण करेलां ग्रंथरत्न स्वकीय भक्तो ने सदैव ज्ञान प्रदान करे छे, जेनुं केवल एकवार रटण मात्र पण एमां रहेलां गुढभावोने प्राप्त कराववा पर्याप्त छे, विद्यादान करवामां जगत मां आवुं सामर्थ्य फ़क्त एमनामांज छे, जेमनुं वाणीस्वामित्व आ प्रकारे निजजनोमां फलित थाय छे एवां वाक्पति श्रीवल्लभ सदैव मारा प्रभु छे." (९)

"इति श्रीव्रजभुषणजीना पुत्र श्रीव्रजेशकुमारजी रचित
श्रीमद वल्लभस्मरणाष्टकंसंपूर्ण".

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७३)

****

८. "श्रीगोपिजनवल्लभाष्टकं"

"श्रीवल्लभ ना प्रतिनिधि रुपे बिराजमान, परम दयालु, वेदान्त ना पारंगत, हरिभक्तिथी परिपूर्ण, श्रीगोपीजनोना स्नेह संयुक्त प्रेमलक्षणा भक्तिने हृदय मां धारण करनार श्रीगोपिजनवल्लभ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं प्रणाम करुँ छुं" (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७४)

****

८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

"श्रीवल्लभ ना पूर्ण अनुग्रह पात्र, श्रीगोपाल अने श्रीगोवर्धननाथ स्वरूपनी सेवामां संलग्न अने ते द्वारा प्राप्त थता अलौकिक भावोना अनुभव मां निमग्न श्रीगोपीजनवल्ल्भ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं प्रणाम करुं छुं. (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७५)

****

" ८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

"श्रीगोपीनाथजी" नामथी विश्वमां प्रसिद्ध अने भक्तो जेमने श्रीवल्लभनंदन स्वरूपे जाणे छे एवा पुष्टिभक्तिना प्रसारकर्ता श्रीगोपीजनवल्ल्भ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं नमन करुं छुं". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७६)

****

८. "श्रीगोपीजन वल्लभाष्टकं"

"श्रीकृष्ण ना मुखार्विन्द स्वरूप श्रीवैश्वानर समान पूर्ण रूप-गुण-कांतिवाळा, सामान्य रुपे गोपबालको तथा गायोना सेवन मां विशेष प्रेम धरावतां अने विशेष रुपे श्रीप्रभुनी सेवामां गोपाल तेमज गोपीवल्लभ नामथी संकेतिक विशिष्ट प्रकार जेमना कारणे शरू थयो अने अद्यापि पर्यन्त चाली रह्यो छे, श्रीवल्लभ नी वाणीना रसास्वाद ना रसिक होवाथी मुख्यतः एनुं ज विश्लेषण करता रहेवाना कारणे स्वतन्त्र ग्रन्थ रचना खुबज अल्प प्रमाण मां जेमणे करी छे, एवा श्रीगोपीजनवल्लभ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं प्रणाम करूँ छुं" (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (७७)

****

८. "श्रीगोपीजन वल्ल्भाष्टकं"

""

"श्रीयमुनाजी ना तट पर (अडेल मां) निवास करनार, पुष्टिना प्रचार मां आवता प्रतिबंधों नुं निवारण करनार, तथा पोतांना पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी ने श्रीआचार्यचरण ना सिद्धांतोंनो सम्यक बोध करनार, श्रीगोपीजनवल्लभ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं वंदन करुं छुं''. (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (७८)

****

८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ एम् चारे प्रकारना भक्तोने यथाधिकार ज्ञान द्वारा प्रबुद्ध करवा पोताना वचनामृतनुं दान स्वकीय भक्तोने करनार, तेमज 'साधन दीपिका' नामक ग्रन्थ नी रचना द्वारा भक्ति ना साधनो नुं विशद निरुपण करनार श्रीगोपीजनवल्ल्भ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं नमन करुं छुं" (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (७९)

****

८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं

""

"श्रीमदाचार्यचरण नां दुर्बोध वचनोने सुबोध बनावी प्रयत्नपूर्वक भक्तो ने समजावनार तथा (पुष्टिभक्तिमार्ग पर अग्रसर थवा इच्छता) भक्तो ना समस्त प्रतिबंधक दोषोने दूर करनार श्रीगोपीजनवल्ल्भ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं नमन करुं छुं". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (८०)

****

८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"भक्तो पर हर्षपूर्वक करुणा थी रासार्द्र थई एमनी अलौकिक अभिलाषाओने पूर्ण करनार, अदेय वस्तुनुं दान करवामा पण समर्थ श्रीगोपीजन वल्लभ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं प्रणाम करुं छुं". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (८१)

****

८. "श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

"आ स्तोत्र नो सदैव पाठ करनार भक्तजन ना मनोरथो नी आवश्यक पूर्ति थशे एवा आपश्रीना चरणकमलमां दृढ विस्वास सहित श्रीगोपीजनवल्लभ (श्रीगोपीनाथजी) ने हुं नमन करुं छु." (९)

"इति श्रीमद व्रजभूषणजीना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी
कृत श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं सम्पूर्ण"

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८२)

****

९. "श्री विट्ठलेश स्तवन"

"श्रीमद वल्लभाचार्यजीना पुत्र, मनोहर कान्तिवाळा, पुष्टिना प्रसार हेतु दृढ रीते आत्मचित्त अने श्रीकृष्ण नी सेवाना रसथी आत्मसुखनी अनुभूति करनार श्रीविट्ठालेशचरणना शरण नो हुं आश्रय करुं छुं. (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८३)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"सेवा पण सेव्य श्रीकृष्ण नी रूचि अनुसार , स्नेहसंयुक्त होवी जोइए, श्रीकृष्ण ने सुख उपजे ए प्रमाणे एकाग्र मनथी तेमज आचार्यवर्योए प्रस्थापित करेला नियमो मां रहीने निष्ठापूर्वक करवी जोइए. आवुं निर्देशन करनार श्रीविट्ठलेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करूं छुं". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८४)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"धर्मांध शासको ना जुल्मी शासन थी पीड़ित जनताने प्रेमार्द्र भक्तिनो मार्ग ज शाता प्रदान करवाने समर्थ छे अने एना द्वारा ज मनुष्य नवजीवन नुं संबल प्राप्त करी शके छे एवुं समजावनार श्रीविट्ठालेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करु छू.". (३)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (८५)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"श्रीवल्लभाचार्यजीना वचनो मां निहित भावनुं निरुपण करी, शास्त्रोंने संमत एवी अनेक ग्रंथरचनाओ स्वयं पण करनार, तथा ए प्रकारे पुष्टि नी प्रभाने अधिक निर्मल - धवल - उज्ज्वल करनार श्रीविट्ठलेशचरणना शरण नो हुं आश्रय करुं छुं". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८६)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"नाम 'सुबोधिनी' होवा छतां समजवा मां दुर्बोध एवी श्रीआचार्यचरण नी वाणी ने सर्वोतम स्तोत्र रूपी साधन थी जनहितार्थ सुबोध बनावी भक्तोने ज्ञान प्राप्ति सुगम करावी आपनार श्रीविट्ठलेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करुं छुं". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८७)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"जेमना द्वारा रचित दशम स्कंधनी 'श्रीटिप्पणीजी' नामे प्रसिद्ध टिकाने रसिकजनो अत्यन्त आदरपूर्वक मस्तक पर धारण करे छे, अने जेमनी अन्य रसभावपूर्ण रचनाओं पण सुज्ञ - विज्ञ जनो माटे सदैव समादरणीय रही छे एवा श्रीविट्ठलेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करुं छुं". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८८)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"श्रीहरिनी भक्ति नी सिद्धि हेतु पोतांना साते पुत्रो साथे पृथ्वी पर पुष्टि ना प्रचार हेतु सदैव प्रयत्नशील अने भक्तोने भावपूर्ण सेवा नुं स्वरूप समजावनार श्रीविट्ठलेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करु छुं". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (८९)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"प्रभु श्रीगोवर्धनधरण नी तत्सुखात्मक सेवा नो भार पोतांना पुत्रो ने सोंपिं पोताना घरने मुख्य राखी घर नुं तेमज नवनवीन स्वरूपोथी बिराजमान श्रीप्रभु ना स्वरूपो नुं पोताना पुत्रो मां विभाजन करनार श्रीविट्ठलेशचरण ना शरण नो हुं आश्रय करुं छुं".(८)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (९०)

****

९. "श्रीविट्ठलेश स्तवन"

"श्रीकृष्णनी करुणा ना रस थी भरेला श्रीविट्ठलेश ना आ स्तवन नुं, जे श्रीवल्लभ नी कृपाथी ज रचायु छे, एने आ दास अहीं पूर्ण करे छे. एना पाठ ना फल रूपे नित्य श्रीप्रभु मां अनुरागनी वृद्धि थाओ !" (९)

"इति आचार्य श्रीव्रजभुषणजीना आत्मज श्रीव्रजेश्वरजी द्वारा

रचित श्रीविट्ठलेश स्तवन संपूर्ण".

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९१)

****

१०. "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"श्रीमद विट्ठलेश प्रभुचरण ना तृतीय पुत्र रुपे प्रगट थई श्रीविट्ठलेश नां चरणों मां विश्वास उत्पन्न करनार, मातृचरण श्रीरुक्मणिजी नां करकमलों मां बीराजी बालसुलभ चेष्टाओं द्वारा मातापिताने आनंद आपनार, पोतांना ज्येष्ठ भ्राता श्रीगिरिधरजी ना स्नेह-द्रवित हृदय थी विद्या रूपी प्रसाद प्राप्त करनार श्रीबालकृष्णजीने विनययुक्त मनथी हुं मारा चित्तमां धारण करुं छुं" (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९२)

****

१०. "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"श्रीव्रजराजकुमारनी श्रीगोवर्धन पर्वत पर सुन्दर प्रकारे सेवा करी, पोतांना पितृचरण द्वारा व्रजभूमिना लाडिला व्रजानंदकंद ने श्रीद्वाराकाधीश ना स्वरुपे प्राप्त करनार, तथा व्रज वनिताओना मुकुटमणि श्रीराधिकाजी ने पोताना श्रीप्रभुना स्वामिनीजी रुपे प्राप्त करवानी इच्छा ने पोताना पितृचरण समक्ष प्रार्थनापूर्वक निवेदन करनार, विद्याना गाम्भीर्यथी युक्त श्री बालकृष्णजी ने विनययुक्त मनथी हुं धारण करुं छुं." (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९३)

****

१०. "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"श्रीयमुनाजी ना तट पर स्थित जलथी भीनी भेखड़ मां थी प्रकट थयेला पोताना स्वामीना मुख्य आल्हादिनी शक्ति श्रीराधाजीने (गुंजावन मा थी) प्राप्त करी, शीघ्रता पूर्वक पोताना घरे पधरावी जनार अने त्यां श्रीयुगल स्वरूपनो विवाह संपन्न करावी निजसेव्य श्रीयुगलस्वरपने अविरतपणे हृदयमा धारण करी एमनी सेवा करनार श्रीबालाकृष्णजीने विनयपूर्वक हुं मारा चित्त मा धारण करुं छुं"(३)

"श्रीव्रजेश चित्तन" - (९४)

****

१०."श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"श्रीयुगलस्वरूप नी प्राप्ति थी आनंदित हृदयावाळा, तथा पूर्वमा स्वप्नमां ए घटना नां दर्शन करी स्वप्नदर्शन स्तोत्र द्वारा स्तुति थी प्रसन्न थएलां श्रीस्वामिनीजी द्वारा प्रदत्त मन्त्र नी संपूर्ण विधिपूर्वक अनुष्ठानात्मक सेवा करनार, पोताना पत्नी श्रीकमलावतीजीनी साथे मळी नंदराजकुमार श्रीद्वारकाधीश प्रभु नी निज इष्ट ना रूपमा सेवा करनार श्रीबालकृष्णजीने विनययुक्त मनथी हुं मराया चित्त मां धारण करुं छुं". (४)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (९५)

****

१०. "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"समग्र पृथ्वी ना वैष्णवो मां शुद्धाद्वैत नो प्रचार संपादित करी, 'पादार्थ्य-चिंतामणि' ग्रन्थ नी रचना द्वारा पंडितोने पण प्रबुद्ध करनार, श्रीमदाचार्यचरण कृत 'अणुभाष्य' ने सरल रुपे समजाववा एना ऊपर 'प्रसाद वागीश' नामक भाष्य रचनार श्रीबालकृष्णजी ने विनयपूर्वक मनथी हुं मारा चित्त मां धारण करुं छुं" (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९६)

****

"श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"सिद्धांतो मां पारंगत पोतांना पुत्रो सहित पोताना वैष्णव सेवको ने नित्य श्रीगोपिकाधीश प्रभुना चरणकमलोनी सेवामां नियोजित करनार तथा श्रीप्रभुना स्वरूप तेमज एमनी प्रेमा भक्ति ना प्रकार ने सरल वचनो थी समजावनार श्री बालकृष्णजीने विनययुक्त मनथी हुं मराया चित्त मां धारण करूं छुं". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९७)

****

१० "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"वैश्वानर स्वरूप श्रीमदाचार्यचरण नी कुलपरंपरा नी गरिमा नी सुरक्षापूर्वक, पोताना भक्तोमां साक्षात श्रीकृष्ण स्वरूप मां अनन्य भावने सुपुरित करनार, तेमज श्रीगोपीजनोनी प्रेमलक्षणा भक्तिपूर्वक श्रीद्वाराकेशप्रभु नी सेवा करनार श्रीबालकृष्णजीने विनयपूर्वक मनथी हुं मारा चित्तमां धारण करु छुं" (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९८)

****

१०."श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"निजस्वरूप मां निष्ठावान भक्तो ना उद्धारना हेतुथी ज एमना पर प्रचुर मात्रा मां कृपा करनार, पोताना कुलनी मर्यादानुसार श्रीकृष्णने इष्ट रुपे सेव्य स्वरपे पधरावी आपी, अदेय दान द्वारा पोताना पुत्रो मां श्रीमदाचार्यचरण ना प्रताप ने समुत्पन्न करनार श्री बालकृष्णजीने विनेयपूर्वक मनथी हुं मारा चित्तमा धारण करुं छुं".(८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (९९)

****

१०. "श्रीमद बालकृष्ण स्तवन"

"मेघश्याम श्रीअंगवाळा, विकसित कमल नी आकृति जेवा नेत्रोवाळा, शिरोभूषण बाजुबन्ध-बहुमूल्य मोती तथा मणि ग्रथित आभूषणोथी सुशोभित, तेमज श्रीस्वामिनीजी प्रति स्नेहथी आर्द्र हृदयथी श्रीद्वारकेश प्रभुनां चरणकमलों

नी सेवा मा आसक्त चित्तवाळा श्रीबालकृष्णजी ने एमना पुत्रो सहित हुं परणात्म करुं छुं" (९)

"इति श्रीमद् व्रजभुषणजीना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी कृत
श्रीमद बालकृष्ण स्तवन संपूर्ण".

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१००)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम ! पूर्ण स्वरूप एवा आप समस्त प्रपंच (विश्व) नी रचना मां दक्ष छो. वेदोक्ति अनुसार देवत्व, जड़, जीव, आदि सर्वनुं सर्जन पण आपनामां थी ज थयूं छे. आप एकाकी एकला न रही शक्या होवाना कारणे आपे पूर्वमां पोतानी आत्म शक्ति ने प्रकट करी. आ परथी समजाय छे के आप सर्व उपचारों मां कुशल छो. कृपा करी दास पर कृपावृष्टि करो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०१)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"व्रजमण्डल नां अधिपति हे श्रीनाथ ! आप सर्वसमर्थ छो. गोपालचूडामणी रुपे बिराजमान आप गायो अने गोपीजनो नुं रक्षण करो छो. हे प्रभुवर ! निजभक्तो ना प्राणप्रेष्ठ एवा आप आपनां शरणागत , सेवाविधिमां तत्पर, दासजनोंनी तथा गाय जेवा दीन निस्साधन सर्वे स्वकीय जनो नी रक्षा करो. कारणके, आप गोपति अर्थात हृषिकेश छो तथा गोवर्धनाधीश रुपे आपे जे व्रत धारण कर्यु छे, एने स्मरिने रक्षा करो." (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०२)

****

" ११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यार्थना"

"आप गोपिकाओं ना नाथ छो. गिरिराज गोवर्धन ना नाथ छो. करुणा ना सागर छो तथा व्रजजनोने आनंद प्रदान करनार छो. आप ज राधिकानाथ, श्रीनाथ छो, गोकुल ना चिंतामणि एवा आप वेणुना स्वरोथी सर्वने मोहित करनार छो. भक्तोनी इच्छा परिपूर्ण करनार, स्वकीय जनोना हृदय मां पोतानी विभिन्न लीलाओ नी सुन्दर छटाओं नो अनुभव कारावनार अने गायो ना समूह ना मध्य मां पधारी रहेला हे व्रजपति ! आपनां सेवक पर कृपा करो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०३)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे श्रीद्वारकाधीश प्रभो ! समस्त गोकुल ना स्वामी अने श्रीराधिकाजी ना प्राणनाथ एवा आप भक्तो नो भय

दूर करवा हेतु कृपा करीने चक्रराज सुदर्शन ने धारण करो छो. शंख, चक्र, पद्म आदि आयुध पण दुष्टो ना दमन माटे धारण कर्या छे तथा श्रीकौस्तुभ थी आप विभुषित छो. दीन - अनाथ जनो पर दया करनार हे दयानिधि ! आपना दास पर कृपा करो." (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०४)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे श्रीमद् वल्लभाचार्य चरण ! आप करुणा ना सागर अने श्रीमद् गुरु पण छो ! पाखंडी रुप धारण करेल दुर्जनो द्वारा सर्जित दोषारोपण ना कोलाहल थी व्यथित, आपना चरणारविन्दना निर्मल स्नेह मां अनुरक्त अने आपना वंश मां जन्मेल होवाथी आपनां अंशरुप एवो हुं आपनो अनुग्रह प्रार्थु छु. भक्तोनी इच्छा परिपूर्ण करनार हे प्रबो ! निजकुल मां उत्पन्न आपना आ दास नी रक्षा करो". (५).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०५)

****

.११."श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे गोपीनाथ दयानिधि ! पोतांना खलापणाथी अर्थ नो अनर्थ मय विघटन करी पुष्टिमार्ग नी प्रभाने दूषित करनार दुर्जनो ना त्रास थी मने सुरक्षा प्रदान करो. दंभी जनो ना उच्छृंखल उद्दाम भावोना कारणे शुद्ध प्रेमाभक्ति नुं विधान आजे विगलित-कुरूप थई रह्यु छे त्यांरे आपनां चरणों मां ए प्रार्थना छे के एनुं निवारण करवानी तथा मने आपनो आश्रय प्रदान करवांनी कृपा करो". (६).

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१०६)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे श्रीमद् विट्ठलनाथ प्रभु ! आपना ज वंशमा उत्पन्न थयेल आपनां आश्रित जननी रक्षा करवांनी कृपा करो. मिथ्या दोषारोपण नां विधानोनी कालिमा थी उत्पन्न मारा मन नी खिन्नता ना निवारण नो उपाय करवांनी कृपा करो. मारा परिवार नी रक्षा हेतु आ व्यथाना वातावरण ने दूर करवानी कृपा करो." (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१०७)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"श्रीराजीवलोचन, गुणो ना सागर हे श्रीबालकृष्ण प्रभु ! आप भक्तोने शुद्धा भक्ति मां संयोजित करी एमनुं हित साधनार छो, तथा प्रेमाभक्तिमिश्रित मधुरता नो सेवा विधिमां अनुभव करावनार छो.आपना दास एवा मने श्रीवल्लभ प्रभुना पाराध्र्य ज्ञान नुं दान करवानी कृपा करो". (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१०८)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"आपे जेंने पोतानु मान्यु छे एवा कुलमां आपे कृपा करी जन्म आप्यो छे तेथी अमे धन्य छीए. श्रीमद् वल्लभाचार्यचरण नी कृपा रुप संजीवनी ज पाखंड थी भरेला आ लोकवैभवथी अमारी मति ने मोहित -मूर्छित थती बचावे ए ज अभिलाषा हे करूणानिधि ! श्रीद्वारकेश प्रभो ! आपनां चरणों मां निवेदित करीए छिए''. (९)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१०९)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"सुविज्ञ अने स्वकियजनो पर कृपा करनार श्रीद्वारकेश तातचरण श्रीद्वारकेश प्रभुनी सेवा हेतु अमारी रक्षा करे छे तथा विद्याभ्यास ना उपक्रम मां पण अमने कृपापूर्वक मार्गदर्शन प्रदान करनार छे, एटलूं ज नहीं, निजजनो ने पुष्टि ना स्नेह थी सिंचित करी श्रीहरि ना बनावी दे छे". (१०)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११०)

****

११. " श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"पोताना दिव्य संकेतो थी मने अनेक प्रकारनो बोध प्राप्त कारावनार तेमज श्रीयुगलनिधि स्वरुपनी सेवामां पद्धति तथा सिद्धांतना ज्ञानरुपी अमृतथी मने अभिसंचित करनार हे श्रीमद श्रीगिरिधरजी ! आप अपार कृपा करनार छो. श्रीगुरुजन पोतांना आत्मीय जाणीने ज आवी कल्याणकारी कृपा करे छे आपनी सरखामणी अन्य कोई साथे थई शके एम नथी. तेथी आप ज अमारी सदा रक्षा करो". (११)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१११)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"हे तातचरण श्री द्वारकानाथजी ! श्रीप्रभुए आप पर विशिष्ट कृपा करी आपने कुंजमंडप मां श्रीयुगलस्वरूप नी सेवा चिरकाल माटे प्रदान करी छे. अमारा कुलनायक नी करुणा नी अभिवृष्टि अमारा पर क्यारे थशे ? हे श्रीमत् तात चरण ! श्रीप्रभुने अमारा विषय मां प्रार्थना करवा हुं आपने प्रणाम पूर्वक निवेदन करूं छू." (१२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११२)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

****

"श्रीव्रजपति श्रीद्वारकाधीश प्रभूने श्रीगोकुल थी गुर्जर देशमां राजनगर मां पधारावी त्यां गुप्त प्रकारे सेवानो प्रारम्भ करनार, त्यारबाद पोतानी साथे ना सेवजनो परिकर सहित पोतानी जागीर ना गाम आसोटिया मां बिराजमान करनार, अने तत्पश्चात नजीक मां रायसागर ना तट पर कांकरोली मां श्रीप्रभुनुं मंदिर सिद्ध करावी त्यां पधारावनार

तातचरण हे श्रीमद् श्रीव्रजभुषणजी ! आप सदैव अमारा पर कृपा करो". (१३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११३)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"कांकरोली मां सागरतट परना भवन मां श्रीप्रभुने प्रसन्नतापूर्वक पधरावी अनेकविध लाड लडावनार अने पोताना वंशजो पर ज्ञानामृत नी वर्षा करनार हे तातचरण श्रीमद गिरिधरजी ! आपने अमारी एज प्रार्थना छे के आप एमने श्रीद्वारकेश प्रभुनी सेवा प्रदान करो". (१४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११४)

****

११. "श्रीमतां चरणे श्वभ्यर्थना"

"गुरुवर, नीति-विशेषज्ञ, अने विद्याना निधि, तथा सर्वजनोना हितकारक एवा हे तातचरण श्रीमद श्रीव्रजभूषणजी ! आप केवल श्रीप्रभुनी सेवा मां तत्पर ज नहीं , परंतु एनी परा अनुभूति नुं ज्ञान धरावो छो. भगवत शास्रो द्वारा भक्तजनोने प्रबोधित करवामा प्रसन्नता अनुभवनारा तथा आत्मीय जनो ने चारेय पूरुषार्थोनी सिद्धिनुं दान करवा सक्षम एवा आपने विनंती छे के पोतानी करुणा थी आपनां दास एवा अमारु सर्वदा संरक्षण करता रहो". (१५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११५)

****

११. "श्रीमतां चरणे श्वभ्यर्थना"

"हे तातचरण श्रीव्रजनाथजी ! आश्रित जनो ने आप भगवत्सेवा परायण बनावो छो तथा शास्त्रोना गहन प्रवाहना अवगाहन थी फलित थती परा भक्ति नुं दान पण करो छो. पोताना बन्ने पुत्रो ने पोताना पितृचरण ना आश्रय मां सोंपी, मन नी दृढ़ता थी प्रभु ना सेवन हेतु श्रीप्रभुना धाममां पधारी श्रीप्रभुनी समीप मां रहेवानो निर्णय आपे भले लीधो, छतां पण पोताना आ सेवक पर कृपा करो. (१६).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११६)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"श्रीद्वारकेशप्रभु नी सेवा माँ तेमज भक्तो नो भय दूर करवामां चतुर होवानी साथे विद्वानों ना शिरोमणि एवा अमारा तातचरण हे श्रीविट्ठलनाथजी ! भक्तो ने पुष्टिमार्ग नुं यथार्थ ज्ञान प्रदान करवा भारतभर मां परिभ्रमण करनार आप श्रीमान नो विजय हो ! पोताना प्रसन्नता ना गुण द्वारा आ दास पर कृपा नी अभिवृष्टि करो". (१७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११७)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"नंदमहोत्सववाळा" तरीके जगतमां विख्यात, श्रीहरिनी सेवा तथा तेनी परानुभूति मां निष्णात, अने सज्जनो जेमने विद्यानिधि माने छे एवा तातचारण हे श्रीमद श्रीव्रजभुषणजी, तेमज श्रीप्रभुना चतुर्भुज स्वरूपे दर्शन आपी लुंटाराओने दिव्य अनुभूति कारावनार एमना पुत्र श्रीगिरिधरजी ! आप श्रीमान करुणापूर्वक सदा अमने आशीर्वाद आपता रहो". (१८)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११८)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"हे आचार्य श्रीपुरुषोत्तमजी तातचरण ! आप गुणनिधि छो. दिव्य आत्मशक्ति थी परिपूर्ण छो अने पोतांना ज्ञान ने कारणे 'गोस्वामी कुलभूषण' तरीके जगतं मां प्रसिद्ध छो. विद्वद् जनो ए शुद्धाद्वैत सिद्धांतनुं ज्ञान मेळववुंज जोइए एवो आग्रह सेवनारा आप अमने ए सिद्धान्त समजाववा माटे 'प्रसादवागीशभाष्य' नुं ज्ञान प्रदान करवा नी कृपा करो". (१९)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (११९)

****

११. श्रीमतां चरणे श्वभ्यर्थना"

"मूल्यवान मोती नी जेम परम्परामा प्रकाशमान गोस्वामी श्रीगिरिधरजी तातचरण नो सिद्धान्त बोध पण अद्भुत छे. शिष्य समुदाय ने पोतांना अमृत वचनो द्वारा पुष्टिमार्ग नी प्रभा नुं ज्ञान प्रदान करवानी साथे-साथे श्रीद्वारकाधीश प्रभु नी सेवाने पण प्रेमपूर्वक संपादित करी रहेलां आप श्रीमान करुणापूर्वक सदा अमारा पर आशीर्वाद वरसावता रहो". (२०)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२०)

****

११ "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थ्यना"

"मधुरभाव पूर्ण सेवा द्वारा श्रीप्रभुने प्रसन्न करी एमनी स्नेह-वर्ष सहित पूर्ण कृपा संपादन करनार तथा अमृतमय संगीत अने गीत ना सागर समान मारा पितामह हे श्रीबालाकृष्णजी तातचरण ! आप श्रीमान नां चरणों मां ए ज अभ्यर्थना छे के पोतांना वंश मां जन्मेला अने आपनां सेवक एवा मारा पर कृपा करो". (२१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२१)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना

"सकल विद्याओ मां शिरोमणि मनायेला, बाल्यावस्था होवा छतां पंडितों द्वारा 'बालसरस्वती' ना बिरुद थी विभूषित करायेला तेमज श्रीद्वारकेशजी नामथी आचार्य पद पर बिराजमान थयेला मारा पितृचरण ना ज्येष्ठ भ्राता हे श्री द्वारकेशजी ! आप प्रभु छो, समर्थ छो, माटे आपनां चरणों मां ए ज प्रार्थना छे के अनेकविध विवादोना अमारा पर

घेरायेला वादळो छ्वायेली कालिमा ने आप दूर करो ". (२२).

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२२)

****

११. "श्रीमतां चरणेश्वभ्यर्थना"

"दयानिधि एवा हे श्रीमत् पितृचरण ! पोताना पुत्र पर थइ रहेला सीधा -आडकतरा प्रहारोथी एने बचाववा माटे श्रीप्रभुना बलथी सिंचित जे संबल आप प्रदान करी रह्या छो ए करुणा केवल शिष्य अने पुत्र पर श्रीगुरु द्वारा ज संभव छे. पोताना कुल ना संपोषण हेतु आपना चरणोमां प्रणामपूर्वक मारी प्रार्थना छे." (२३)

समाप्ता

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२३)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुतिः

" श्रीमत्सौन्दर्यवतीजि माातृचरण नी कुखथी प्रकटित रत्न, जेने आपे पोताना हस्तकमल मां धारण करी राख्यु छे, जेमना जनक पिता होवाना कारणे अपार सुख प्राप्त करीने आचार्य श्रीबालकृष्णजी साक्षात श्रीनंदरायजी नी जेम अत्यंत हर्षित थई रह्या छे, अनेक गुणोना भंडार एवा जेष्ठ भ्राता श्रीद्वारकेशजी जेमनी साथे भ्रातृस्नेहथी निबध्द छे, एवा श्रीव्रजभूमिना विभूषण रूप मारा वितृचरण अने गुरु मारी रक्षा करो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२४)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"अति श्रेष्ठ दिव्य रुप युक्त, बाल्यावस्थाथी ज भगवत्सेवा नी निरंतर आतुरता ना भावपूर्वक श्रीप्रभुना अलौकिक स्नेहमां निमग्न एवा द्वितिय ज्येष्ट भ्राता निखिलभूवन स्वामी श्रीप्रभुना चरणकमलोमां चाल्या गया पछी, स्निग्ध स्नेहपूर्ण नानाभाई श्री विट्ठलनााथजी साथे ज सर्वदा रहेनार एवा श्रीव्रजभूमिना विभूषण रूप मारा पितृचरण अने मारा श्रीगुरु मारी रक्षा करो" (२)

"

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१२५)

****

१२ " श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"श्रीमत् चंद्रप्रभा नामक पोतानी परिणय सखी (पत्नी) ने धर्मसाक्षी बनावी व्रजना उभय नवलशिशु श्रीराधा-कृषण नी युगलस्वरुपे सदैव स्नेहपूर्ण सेवा करतां पोताना पुत्रो, पुत्रीओ अने पौत्रोनुं निर्मल हृदय थी पालन करवानी साथे एमने शिक्षित कर्या एवा व्रजभूमिना विभूषण रूप मारा पित्रृचरण अने मारा श्रीगुरु मारी रक्षा करो". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२६)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"सागर समान गहन शुद्धाद्वैत नां शास्त्रो नो, वेदमार्ग नी विधि अनुसार अने भक्तिमार्गानुकुल प्रकारे शिष्योने बोध करी, एमनामां श्रीहरिना चरणार्विंद नी रतिपूर्वक भावसंबंध उद्भूत करनार तथा मारा हृदय मां श्रीवल्लभाचार्य चरण नुं स्वरुप जेओ सर्वदा संस्थापित करता रह्या एवा श्रीव्रजभूमिना विभूषणरुप मारा पितृचरण अने मारा श्रीगुरु मारी रक्षा करो". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन " - (१२७)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"श्रीवाक्पति नी वाणीने सुबोध रुप मां रसिकजनोना हितार्थे अभिभाषित करनार, श्रीद्वारकाधीश प्रभुना चरणयुगलमां भावपूर्वक सेवा समर्पित करनार, तथा कोई दोष - अपराधने कारणे पक्षीयोनिमां जन्म लई भूतल पर आवनार पोताना जीवोने ओळखी एमनी स्नेहपूर्वक रक्षा करनार तेमज पुष्टिमार्गनी मर्यादा अनुसार एमने पुन: श्रीप्रभुना श्रीहस्तमां समर्पित करनार मारा श्रीगुरु छे". (५)

१२ "श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२८)

****

"श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"मंद - मध्यम - उत्तम एम त्रणेय प्रकारना अधिकारी जनोने जेमणे श्रीप्रभुना चरणोमां भक्तियुक्त बनाव्या, श्रीमदाचार्यचरणनी वाणीना माध्यमथी ज समस्त प्रबुद्ध जनोने जेमणे अधिक प्रबुद्ध बनाव्या अने महानुभाव भक्तो द्वारा रचित कीर्तनोने प्रसन्न्तापूर्वक मुद्रित करावी जेमणे लोकभोग्य बनाव्या, एवा, भक्तिना प्रकाश ने चारे दिशामां फेलावनारा मारा गुरु छे". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१२९)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"पोताना ईष्ट प्रभुनी आज्ञा शिरोधार्य करी प्रसन्न मनथी चिंतामुक्त भावने अंगीकार करनार, जगतमां सर्व साथे सरल हृदयथी सौहार्दपूर्ण व्यवहार करनार, आत्मीयजनो ने नीति अने वेदमार्ग संमत पुष्टिभक्तिनुं स्वरुप समजावनार एवा श्रीव्रजभूमिना विभूषण रूप मारा पितृचरण अने मारा गुरु मारी रक्षा करो". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३०)

****

१२ "श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति"

"श्रीकृष्णना मुखार्विंद स्वरुप श्रीमद् वल्लभाचार्यजीना वंशमां संपुर्णतया अनुसरण करनार

श्रीबालकृष्णलालजी नी परंपरा मां प्रादुर्भूत, श्रीद्वारकाधीश प्रभुना चरणयुगलमां सर्वदा आसक्त चित्तवाळा, विद्याना गांभीर्यथी युक्त होवा छतां अतिशय सरल स्वभावथी तथा प्राणीमात्रने जे प्रिय छे अथवा कहोके प्राणीमात्र जेमने प्रिय छे, एवा श्रीव्रजभूमिना विभूषण रुप मारा पितृचरण अने मारा श्रीगुरु मारी रक्षा करो". (८)

"इति श्रीव्जभूषणजीना आत्मज श्रीव्रजेशकुमारजी
द्वारा रचित श्रीमद् गुरुवर्य स्तुति संपुर्ण"

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३१)

****

१३. "विज्ञप्ति

"दोषोथी भरेला होवाना कारणे संसार सागरने पार करवामां पण असमर्थ तथा कलिनी कालिमाना प्रभावथी दुर्गुणोथी परिपूर्ण एवा जीवो पण हे प्रभो ! आपना चरणकमल ना आश्रय मात्र थी ज वैकुंठगमन करावनार भक्ति रुपी राजमार्ग ने प्राप्त करे छे". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३२)

****

१३. "विज्ञप्ति

"श्रीवल्लभ द्वारा आपना चरणो मां निवेदित करायेला अने केवल आपना पादसेवन मां आसक्त एवा आपना दास, जे आपना चरणोने छोडीने कोईपण मुक्ति नी ईच्छा नथी राखता, एमनी करुणामय दृष्टि नी वृष्टि थी आप सदा रक्षा करो". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३३)

****

१३. "विज्ञप्ति

"जेमनो कदी त्याग करवा योग्य नथी एवा आपना दास अमे वैश्वानर नी वदनकमलनी प्रभा ना अंशथी समुत्पन्न थयेला अने आपना चरणोमां एकनिष्ठ छीए. आपनी कृपा थाय तो आपना चरणकमलनी रजना रसिक अभ्यर्थी एवा अमारामां बहिर्मुखता कदापि संभवी शकती नथी". (३)

"श्रीव्रजेश चितंन" - (१३४)

****

१३. "विज्ञप्ति

"गोपीजनो पर जेवी रसपूर्ण दृष्टि आप राखो छो, गोकुलमां रहेनार गोपालको अने गायोना समुह पर जेवी रसभीनी दृष्टिनी वृष्टि करो छो, ए ज प्रकारे आपमां एकनिष्ठ भाव राखनार एवा अमारी पण आपे रक्षा करवी ज जोईए,

कारणके दुष्टोनुं दमन करवुं ए ज आपनो स्वभाव छे". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३५)

****

१३. "विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""

"आपनां चरणकमलना शरणे आवीने अमे कुसृष्टीथी भरेला आ लोको रूपी दुस्तर समुद्र ने , दुष्टो थी घेरायेला होवा छतां पण पार करी जईशुं. हे व्रजजनोना ईश ! आपनी कृपापूर्ण दृष्टिथी अमने चित्त मां एवुं दृढ़ बल प्राप्त थयुं छे.". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३६)

****

१३ "विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""

"हे श्रीगोकुल ना स्वामी ! हे श्रीकृष्ण ! दैवीगुणो थी युक्त जीवो पण आपनां वियोगना अनुभव थी क्लेश पामी रह्या छे, त्यांरे आपने ए अभ्यर्थना छे के आटला कठोर चित्तवाळा आप ना बनो. करुणा ना सागर एवा हे नाथ ! आपनी दृष्टि ना दान द्वारा एमने संजीवनी प्रदान करो". (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३७)

****

१३. "विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""

"आपनां नामना उच्चारण मात्रथी दुष्टजनों पण भक्त पदवीने पामे छे, परंतु भावपूर्वक आपनुं भजनं करनाराओं ने अतिशय पीड़ा एनुं शुं कारण ? है प्रभु ! आपनां दास एवा अमारी उपेक्षा करवी आपनां माटे योग्य नथी". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१३८)

****

१३. "विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""

"हे प्रभु ! हे मारा स्वामी ! आपना चरणार्विन्द मां एटली ज प्रार्थना छे के आपनां दासगणने कष्ट केम भोगववु पड़े, ए आपे विचारवुं जोइए कारण के एनाथी हानि तो आपना प्रभुत्वनी ज थाय छे." (८)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१३९)

****

१३. "विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""

"मारा हृदय नी उर्मिओ थी प्रकट थयेला अने श्रीप्रभु ना चरणकमल मां निवेदित करायेला आ भावो नुं, श्रीप्रभुना सानिध्य मां मनःपूर्वक पाठ करनार ने श्रीप्रभुना चरणकमलों मां निष्ठा नुं दान प्राप्त थाय छे."

"इति आचार्य श्रीव्रजभुषणजीना पुत्र श्रीव्रजेशकुमारजी
कृत विज्ञप्ति संपूर्ण".
""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४०)
****
१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"
""

"माता यशोदाजी द्वारा लाड लडावायेला, श्रीराधिकाजी ना रसेश्वर, दैवी भक्तवृंदोंना घरोने व्रजालय बनावी त्यां बिराजी सदा एमनी सेवा अंगीकार करनार हे कृपानिधि ! सदैव आनंद सहित दासभाव ने धारण करनार श्रीवल्लभ ना आ वंशज पर कृपा करो". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४१)
****
१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"
"""

"पोताना भक्तो नी रक्षा करवामां चतुर, श्रीवाकपति स्वरपे बिराजमान श्रीहरि, विशुद्ध पुष्टिभक्तिमार्गना रूप मां शुद्धाद्वैत मार्ग ना उपदृष्टा, कोमल ह्रदय वाळा पोताना भक्तो नां अंतःकरण मां दयानिधि श्रीप्रभुना स्वरूप ने स्थापित करनार, श्रीप्रभुना मुखार्विन्द ना उज्वल वह्नि स्वरूप एवा श्रीवल्लभ नुं हुं भजन करुं करु छुं". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन"- (१४२)
****
१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"
""

"पुष्टिभक्ति ना साधनो ना निदर्शन हेतु श्रीआचार्यचरणो ना सिद्धांतोंनेज अनुसारता 'साधनदीपिका' ग्रन्थ ने प्रकट करी तेना द्वारा पोताना वैष्णवजनोने प्रबोधित करनार,पोताना पुत्र तथा शिष्यमण्डल ने प्रशिक्षित करनार तेमज मार्ग ना प्रचार - प्रसार हेतु समग्र भारत नी परिक्रमा मां संलग्न श्रीगोपीनाथजी नो हुं आश्रय करुं छुं". (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४३)
****
१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"
""

""भक्तिशास्त्रोए बतावेल परंपरागत आचार-विचार ने प्रसन्नता पूर्वक पोताना वंशजो तथा सेवको नी साथे मळी श्रीप्रभुनी सेवामां सदैव भावना सहित प्रयुक्त करवानी साथे-साथे भगवत-सुख ना विचारपूर्वक सेवाविधी नुं प्रवर्तन करनार, तथा सुन्दर - सुमधुर कीर्तनोना माध्यम थी भगवदियो ना ह्रदय मां अलौकिक आनंद समुत्पन्न करनार श्रीविट्ठलेश प्रभुनो अमे आश्रय करीए छीए." (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४४)

****

१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"

""

"पोताना सेव्य श्रीद्वारकाधीश प्रभूने युगल स्वरपे ज सेववाना उत्कट मनोरथ ना फल स्वरपे रसेश्वरी श्रीराधिकाजी ने कलिंदनंदिनी श्रीयमुनाजी ना तट परथी प्राप्त करी प्रसन्नता थी प्रफुल्लित थयेला मनवाळा हे श्रीबालाकृष्णजी ! आपना ए प्रसन्न हृदयथी ज आपना आ आश्रित पर एवी कृपा नी वर्षा करो, जेवी श्रीनन्दनंदन स्वरूप थी आप करो छो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४५)

****

१४. "पंचचामर छंद - स्तुतिओ"

""

"श्रीव्रजेश्वरी स्वामिनिजीनां चरणों नां नुपुरना मंजुल ध्वनि स्वरूप पोतानी विशिष्ट वाणी द्वारा उपदेश थी मारी बुद्धिने प्रबोधित करनार, व्रज नुं विभूषण करनार जेमनु स्वरूप एमना नामथी संकेतिक थाय छे, एवा मारा पितृचरण तथा गुरु ने हुं भावपूर्वक सर्वदा वंदन करुं छु". (६)

"समाप्ता"

""""""""""""""""

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४६)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकं"

""

"श्रीव्रजनवलकीशोर - किशोरीनी युगल स्वरूपे स्नेहस्निग्ध सेवामां रममाण, अति गोपनीय भक्तिमार्ग ने निजसेवक मंडली ने स्नेहपूर्ण रीते समजावनार, श्रीमदाचार्यचरणो द्वारा सेवित श्रीनिधिस्वरूपोने पोताना साते पुत्रोने सेवार्थे पधारावी आपनार, श्रीवैश्वानर स्वरूप ना पुत्र रूपे प्रकट थयेला श्री विठ्ठलेशप्रभुचरण ने एमना कृपाप्रसाद नी प्राप्ति हेतु हुं नमन करुं छुं". (१)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४७)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकं"

""

"श्रीव्रजपतिनी वरण रूपी इच्छा ने सर्वोपरि इष्ट समजी पोतांना हृदयमां धारण करनार, पोताना तेमज पोताना वंशना कुलस्वामी तरीके, 'अस्माकं कुलपतिः गोवर्ध्धनधरः' वचनों द्वारा श्रीगोवर्धनधरणने स्वीकारनार श्रीराधा-रशेष रुपे(श्रीनवनितप्रियाजी अने श्रीनाथजी स्वरुपे) कृपासिंधु श्रीकृष्ण ने पोताना स्वामी माननार, श्रीहरिवदनावतार श्रीवल्लभ ना नंदन श्रीविट्ठलेश, युगल स्वरूप ना दास एवा मारा पर कृपा करो". (२)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१४८)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकं"

"श्रीगोपिनाथजी ना लघुभ्राता, स्निग्धहृदयी कविशिरोमणी, वेड-वेदांतना विशेषज्ञ, प्रेमा भक्तिना विकास हेतु श्रीगोपीजनवल्लभ ना सेवाप्रकारने सुनिश्चित करनार, तथा श्रीवल्लभाचार्यचरण नी गहन वाणी जेमनी कृपाथी समजाई शके छे, एवा करुणासागर अने पूर्णकाम श्रीविट्ठलेश प्रभुचरण नो सदा जय हो, (३)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१४९)

****

१५. "श्रविठ्ठलेशाष्टकम्"

"श्रीहरिने प्रसन्नताप्रद थाय एवी श्रीगोवर्धनधरनी भोग-रागात्मक, वस्त्र-श्रृंगार, सामग्री-कीर्तन संवलित सेवाने विधिपुर्वक संपन्न करवानुं सामर्थ्य समग्र पृथ्वि पर जेमना सिवाय अन्य कोईनुं नथी, एवा वैश्वानर श्रीमदाचार्यचरण ना पुत्ररत्न तथा समस्त गोस्वामी वंशना प्रपितामह श्रीविठ्ठलेश प्रभुचरण ना चरणमलोनी कृपा नी प्राप्ति अर्थे प्रार्थना करुं छुं". (४)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१५०)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकम्"

"पुष्टि-सिद्धांतोना उद्घोष हेतु भूतल पर प्रकट थयेला 'भूमिभाग्य' श्रीवल्लभ ना आत्मज, निर्मल प्रेममार्गना पथप्रदर्शक रुपे श्रीस्वामिनी श्रीराधिका ना कान्त श्रीकृष्ण ना दासभावने धारण करनार, 'आप सवा करी शिखवे श्रीहरि' ए उक्ति अनुसार स्वयं सेवामां संलग्न थनार, श्रीवल्लभवंशना मुकुटमणि अने स्वयं श्रीहरिनुं ज अवर स्वरुप एवा समस्त दैवी जीवोना समुद्धारक श्रीविठ्ठलेश नो सदा जय हो". (५)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१५१)

****

१५. "श्रीविठ्ठलशाष्टकम्"

"वेदांत रुपी सागरना मंथनथी प्राप्त थयेल प्रमाणोने सुमधुर वचनो द्वारा 'विद्वन्मंडन' ग्रंथमां निरुपित करनार, 'श्रृंगार कल्पद्रुम' श्रीप्रभुनी ललित- रसपूर्ण लीलाओने पूर्ण प्रेमपूर्वक 'श्रृंगार रसमंडन' ग्रंथमां प्रकट करनार, तेमज 'श्रीसुबोधिनीजी' ना दुर्बोध अर्थोने सुबोध करवानी कुशलता - प्रेरणा संपादित करवा माटे 'श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र' कृपापुर्वक प्रदान करनार, श्रीविठ्ठलश प्रभुचरण नां चरणकमलोमां सदैव प्रणाम करीए छीए." (६)

"श्रीव्रजेश चिंतन - (१५२)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकम्"

""

"निज भक्तवृंदने श्रीहरि-गुरु नां चरणोमां समर्पित करनार, निज वंश तेम़ज सेवकोने श्रीगोपीजन भावभावित प्रेमाभक्ति नुं शिक्षण आपनार, वैश्वानरावतार वाक्पति श्रीवल्लभना ग्रंथोने स्वरचित व्याख्याओ द्वारा भक्तोने समजावनार, विद्यागांभिर्यथी युक्त होवा छतां निज भक्तो पर सदा अनुग्रह वृष्टि करनार श्रीगोस्वामिकुलश्रेष्ठ श्रीगुसांईजी परम दयालनो सदा विजय हो". (७)

"श्रीव्रजेश चिंतन" - (१५३)

****

१५. "श्रीविठ्ठलेशाष्टकम्"

""

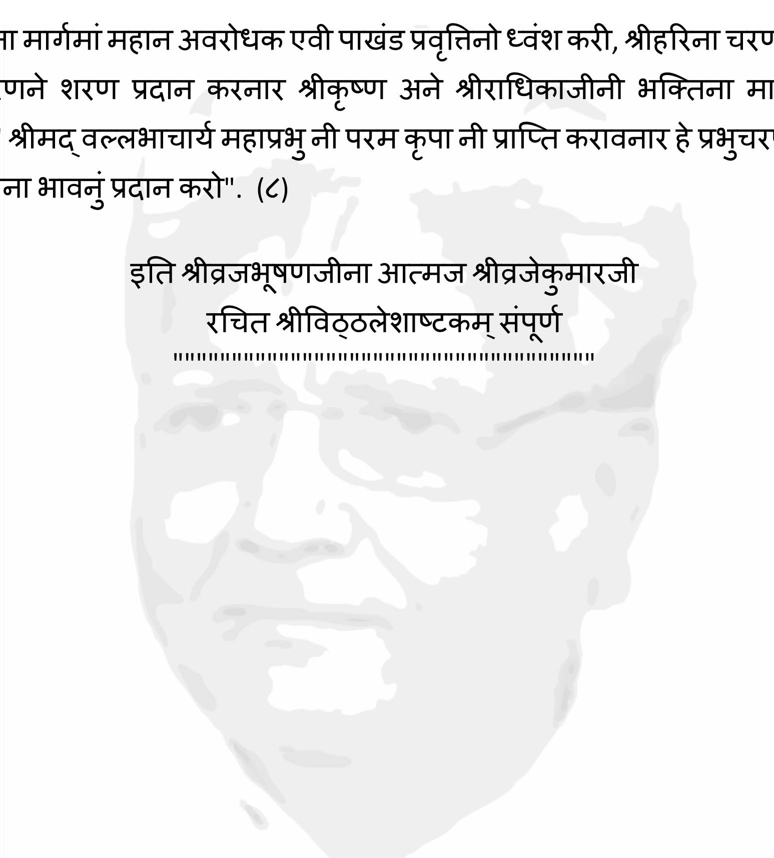

"प्रभु प्राप्तिना मार्गमां महान अवरोधक एवी पाखंड प्रवृत्तिनो ध्वंश करी, श्रीहरिना चरणोनी कृपा भक्तजनोने सुलभ कराववा, अशरणने शरण प्रदान करनार श्रीकृष्ण अने श्रीराधिकाजीनी भक्तिना मार्गनो उपदेश करनार, दैवीजीवोने 'कृपानिधी' श्रीमद् वल्लभाचार्य महाप्रभु नी परम कृपा नी प्राप्ति करावनार हे प्रभुचरण ! आ दासने आपनां चरणकमलोमां दासत्वना भावनुं प्रदान करो". (८)

इति श्रीव्रजभूषणजीना आत्मज श्रीव्रजेकुमारजी
रचित श्रीविठ्ठलेशाष्टकम् संपूर्ण

""